Madhya Pradesh Bhoj (Open) University, Bhopal

एम0ए0 उत्तरार्द्ध– संस्कृत

Subject: I- काव्य **Maximum Marks: 30**

निर्देश–

1. सभी प्रश्न स्वयं की हस्तलिपि में हल करना अनिवार्य है।
2. दोनों सत्रीय प्रश्न पत्र में से किसी एक प्रश्नपत्र को हल करना अनिवार्य है।
3. सत्रीय कार्य उत्तर पुस्तिकाओं के स्थान पर A4 साईज के सादे कागज पर छात्र द्वारा लिखे जायेंगे जिन पर क्षेत्रीय निदेशक के हस्ताक्षरित मुहर अंकित किया होना अनिवार्य है।
4. सत्रीय कार्य जमा करने की अंतिम तिथि 15 अक्टूबर 2011 है।
5. सत्रीय कार्य उत्तर पुस्तिकाओं को जमा करने की रसीद अवश्य प्राप्त कर लें।

Assignment- I

प्रश्न 1 (अ) सप्रसंग व्याख्या कीजिए।

कश्चित्कान्ताविरहगुरूणा स्वाधिकारात्प्रमत्रः
शापेनास्तगङमिततमहिमा वर्षभोग्येण भर्तुः।
यक्षश्चक्रे जनवातनयास्नानपुण्योदकेषु
स्निगधच्छायातरूषु वसति रामगिर्याश्रमेषु।।

(ब) मेघ–मार्ग का वर्णन कीजिए।

प्रश्न 2(अ) सप्रसंग व्याख्या कीजिए।

निवारितास्तेन महीतलेऽरिवले
निरीत्भावं गमितेऽतिवृष्टयः।
न तत्यजुर्नूनमनन्य संश्रया
प्रतीपभूपालमृगीदृशां दृशंः।।

(ब) "नैषधेः पदलालित्यम्" उक्ति को सोदाहरण विवेचना कीजिए।

प्रश्न3 (अ) सप्रसंग अनुवाद कीजिए।

ततोऽवतीर्य तरूशाखायां बद्धवा तुरगङममुपसृत्य
भगवते भक्त्या प्रणम्य त्रिलोचनाय नामेव दिव्ययोषतः
मनिमिषपक्ष्मणा निश्चलनिबद्धलक्ष्येण वक्षुषा पुनविरूप्यामास।
उदपादि चास्य रूपसम्पदा कान्त्या प्रशान्त्या चाविभूतविस्मयस्य मनसि अहो
जगति जन्तूनामसमर्थि तोपनतान्यापतन्ति वृतान्तान्तराणि।

(ब) महाश्वेता का चरित्र चित्रण कीजिए।

प्रश्न 4 (अ) सप्रंसग व्याख्या कीजिए।

अस्त्युत्तरस्यां दिशि देवतात्मा
हिमालयो नाम नगाधिराजः।
पूर्वापरौ तोयनिधौ वगाह्य
स्थितः पृथिव्या इव मानदण्डः।।

(ब) पार्वती–ब्रह्मचारी सम्वाद अपने शब्दो मे लिखिए।

प्रश्न 5 गद्य काव्य की विशेषताएँ लिखिए।

Assignment- II

प्रश्न 1 (अ) विद्युत्वन्तं ललितवनिताः सेन्द्रचापं सचिवाः
सगङीताय प्रहतमुरजाः स्निग्घगम्भीरघोषम्।
अन्तस्तोय मणिमयभुवस्तुगङमभ्रंलिहाग्राः
प्रासादास्तवां तुलयितुमलं यत्र तैस्तैर्विशेषैः।।

(ब) मेघदूत की विशेषताएँ लिखिए।

प्रश्न 2 (अ) सप्रसंग व्याख्या कीजिए।
फलानि पुष्पाणि च पल्लव करे
वयोऽतिपातोद्गतवातवेपिते।
स्थितैः समादाय महर्षि वार्धका
द्वने तदातिथयमशिक्षि शाखिभिः।।

(ब) नैषधीयचरितम् के प्रथम सर्ग के आधार पर नल का चरित्र चित्रण कीजिए।

प्रश्न3 (अ) एवं उक्तश्च मयासस्नेहया सखीमिवोपेकारिणीमिव प्राण प्रदामिव
दृष्टया मामभिनन्धनिकरवर्तिनस्तमालपादपात्पल्लव मादाय निष्पीडय
तटशिलातले तेन गन्धगजमदसुरभि परिमलेन
रसेनोन्तरीयवल्कलैकदेशाद्विपारस त्वया
स्वहस्तकमलनिष्टिकानखशिखरेणभिलिख्य इयं
पत्रिका त्वया तस्यै कनयकार्य प्रच्छन्नमेकाकिन्यैदया।
इत्यभिघायार्पितवान्।

(ब) बाण की शैली पर प्रकाश डालिए।

प्रश्न 4 (अ) तंवीक्ष्य वेपधुमती सरसांगयष्टि
निर्क्षेपणाय पद्धुधृत मृद्वहन्ती।
मार्गाचल व्यतिकराकुलितेव सिन्धुः
शैलाधिराज–तनया न ययौ न तस्थौ।।

(ब) पार्वतीतपश्चर्या का वर्णन कीजिए।

प्रश्न 5 (अ) महाकाव्य का क्रमिक विकास बताइये

Madhya Pradesh Bhoj (Open) University, Bhopal

एम0ए0 उत्तरार्द्ध– संस्कृत

Subject: II- काव्य शास्त्र **Maximum Marks: 30**

निर्देश–

1. सभी प्रश्न स्वयं की हस्तलिपि में हल करना अनिवार्य है।
2. दोनों सत्रीय प्रश्न पत्र में से किसी एक प्रश्नपत्र को हल करना अनिवार्य है।
3. सत्रीय कार्य उत्तर पुस्तिकाओं के स्थान पर A4 साईज के सादे कागज पर छात्र द्वारा लिखे जायेंगे जिन पर क्षेत्रीय निदेशक के हस्ताक्षरित मुहर अंकित किया होना अनिवार्य है।
4. सत्रीय कार्य जमा करने की अंतिम तिथि 15 अक्टूबर 2011 है।
5. सत्रीय कार्य उत्तर पुस्तिकाओं को जमा करने की रसीद अवश्य प्राप्त कर लें।

Assignment- I

प्रश्न 1 (अ) निम्नांकित की सोदाहरण व्याख्या कीजिए।
तददोषौ शब्दार्थौसगुणावनलङ्कृती पुनः क्वापि।
(ब) काव्यप्रकाश के अनुसार काव्यलक्षण की समीक्षा कीजिए।

प्रश्न 2 (अ) अधोलिखित की व्याख्या कीजिए।
विवक्षिंत चान्यपरं वाच्यंयत्रापरस्तु सः।
(ब) भट्टलोल्लट का रसोत्पत्तिवाद को समझाइये।

प्रश्न3 (अ) व्याख्या कीजिए।
प्रतीयमानंपुनरन्येदवस्त्वस्ति वाणीषुमहाकवीनाम्।
(ब) अभाववादियो की समीक्षा कीजिए।

प्रश्न 4 (अ) सप्रंसग व्याख्या कीजिए।
न तज्ज्ञानं न तच्छिल्पं न सा विद्या नसा कला।
नासौ योगो न तत् कर्म नाट्येऽस्मिन्यन्न दृश्यते।।
(ब) नाटयगृह कितने प्रकार के होते है? विवेचना कीजिए।

प्रश्न5 साहित्यशास्त्र के प्रमुखचिन्तको का परिचय दीजिए।

Assignment- II

प्रश्न 1 (अ) निम्नांकित की सोदाहरण व्याख्या कीजिए।
तात्पर्योऽर्थोऽपि केषुचित।
(ब) लक्ष्णातेन षडविद्याः को सोदाहरण समझाइये।

प्रश्न 2 (अ) अधोलिखित की व्याख्या कीजिए।
व्यङ्यमेव गुणीभूतव्यङ्स्याष्टौभिदाः स्मृताः।
(ब) गुणीभूत व्यङ्ग्य काव्य के स्वरूप का निरूपण कीजिए।

प्रश्न3 (अ) व्याख्या कीजिए।
"भाक्तमाहुस्तमन्ये"।
(ब) ध्वनि विरोधी मत की विवेचना कीजिए।

प्रश्न 4 (अ) सप्रंसग व्याख्या कीजिए।
चतुर्हस्तोभवेत् दण्डो निर्दिष्टस्तु प्रमाणतः।
अनेनैव प्रमाणेन वक्षाम्येषां विनिर्णयम्।।
(ब) किन्ही दो पर टिप्पणी लिखिए।
जर्जरः मत्तवारिणी, नेपथ्यः, जर्जरितः।

प्रश्न5 मम्मट का परिचय दीजिए।

Madhya Pradesh Bhoj (Open) University, Bhopal

एम0ए0 उत्तरार्द्ध– संस्कृत

Subject: III- नाट्य एवं नाट्य शास्त्र **Maximum Marks: 30**

निर्देश–
1. सभी प्रश्न स्वयं की हस्तलिपि में हल करना अनिवार्य है।
2. दोनों सत्रीय प्रश्न पत्र में से किसी एक प्रश्नपत्र को हल करना अनिवार्य है।
3. सत्रीय कार्य उत्तर पुस्तिकाओं के स्थान पर A4 साईज के सादे कागज पर छात्र द्वारा लिखे जायेंगे जिन पर क्षेत्रीय निदेशक के हस्ताक्षरित मुहर अंकित किया होना अनिवार्य है।
4. सत्रीय कार्य जमा करने की अंतिम तिथि 15 अक्टूबर 2011 है।
5. सत्रीय कार्य उत्तर पुस्तिकाओं को जमा करने की रसीद अवश्य प्राप्त कर लें।

Assignment- I

प्रश्न 1 (अ) सप्रसंग अनुवाद कीजिए।
नन्दकुलकालभुजगीं कोपानलबहुलनीलधुमलताम्।
आद्यापि बध्यमानां वध्यः को नेच्छति शिखां में।।
(ब) मुद्राराक्षस के आधार पर राक्षस अथवा
चाणक्य का चरित्रचित्रण कीजिए।
प्रश्न 2 (अ) निम्नांकित की सप्रसंग व्याख्या कीजिए।
युष्मान् हेपयती क्रोधाल्लोके शत्रुकुलक्षयः।
न लज्जयती दाराणा सभायां केशकर्षणम्।।
(ब) वेणीसंहार नामक नाटक की कथावस्तु की विवेचना कीजिए।
प्रश्न 3 (अ) सप्रसंग व्याख्या कीजिए।
सुखूं हि दुःखान्यनुभूय शोभते
धनाधकारेष्विव दीपदर्शनम्।
सुखात्तु यो याति नरो दरिद्रतां
धृवः शरीरेण मृतः स जीवति।।
(ब) मृच्छकटिकम् की कथावस्तु अपने शब्दो में लिखिए।
प्रश्न 4 (अ) अधोलिखित की व्याख्या कीजिए।
अवस्थानुकृतिर्नाट्यं।
(ब) संधि कितने प्रकार की होती है स्पष्ट कीजिए।
प्रश्न 5 संस्कृत रूपको का उद्भव एवं विकास बताइये।

Assignment- II

प्रश्न 1 (अ) सप्रसंग अनुवाद कीजिए।
चाणक्यतः स्खलितभक्तिमहं सुखेन
जेष्यामि मौर्यमिति सम्प्रतियः प्रयुक्तः।
भेदः किलैष भवता सकलः स एवं
सम्पत्स्यते शठ तदैव हि दूषणाय।।
(ब) विशाखादत्त की शैली का वर्णन कीजिए।

प्रश्न 2 (अ) निम्नांकित की सप्रसंग व्याख्या कीजिए।
घृतायुधो यावदहं तावदन्यैः किमायुसधैः।
युद्वा न सिद्धमस्त्रेण मम तत्केन सेत्स्यति।।
(ब) वेणीसंहार नाटक का नायक कौन है? स्पष्ट कीजिए।

प्रश्न 3 (अ) सप्रसंग व्याख्या कीजिए।

द्रव्य लब्ध घुतेनैव द्वारा मित्रं घुतेनैव।
दत्रं मुक्त घुतेवैव सर्व नष्टं घूतेवैव।।

(ब) वसन्तसेना अथवा चारूदत्त का चरित्रचित्रण कीजिए।

प्रश्न 4 (अ) अधोलिखित की व्याख्या कीजिए।

मेदैश्चतुर्धा ललितशन्तोदात्रोद्धतैरयम्।

(ब) नायिका के भेद लिखिए।

प्रश्न 5 प्रकरण एवं नाटक में क्या अंतर है विस्तार से समझाइये।

Madhya Pradesh Bhoj (Open) University, Bhopal

एम0ए0 उत्तरार्द्ध– संस्कृत

Subject: IV- धर्म संस्कृति एवं इतिहास **Maximum Marks: 30**

निर्देश–

1. सभी प्रश्न स्वयं की हस्तलिपि में हल करना अनिवार्य है।
2. दोनों सत्रीय प्रश्न पत्र में से किसी एक प्रश्नपत्र को हल करना अनिवार्य है।
3. सत्रीय कार्य उत्तर पुस्तिकाओं के स्थान पर A4 साईज के सादे कागज पर छात्र द्वारा लिखे जायेंगे जिन पर क्षेत्रीय निदेशक के हस्ताक्षरित मुहर अंकित किया होना अनिवार्य है।
4. सत्रीय कार्य जमा करने की अंतिम तिथि 15 अक्टूबर 2011 है।
5. सत्रीय कार्य उत्तर पुस्तिकाओं को जमा करने की रसीद अवश्य प्राप्त कर लें।

Assignment- I

प्रश्न 1 वेदकालीन संस्कृति एवं सभ्यता पर एक संक्षिप्त निबंध लिखिए।
प्रश्न 2 श्रमण धर्म की उपादेयता को स्पष्ट कीजिए।
प्रश्न 3 18 पुराणो का नाम सहित संक्षिप्त विवेचना कीजिए।
प्रश्न 4 संस्कृत साहित्य में राष्ट्रीयता एवं जीवन मूल्यो की विवेचना कीजिए।
प्रश्न 5 सांस्कृतिक पर्यावरण के महत्व को स्पष्ट कीजिए।

Assignment- II

प्रश्न 1 वेद भारतीय संस्कृति के मूल है समीक्षा कीजिए।
प्रश्न 2 श्रमण धर्म की प्रमुख विशेषताएँ लिखिए।
प्रश्न 3 पुराण के लक्षण को स्पष्ट कीजिए।
प्रश्न 4 "संस्कृत साहित्य समाज के विकास परम्परा का साहित्य है" समीक्षा कीजिए।
प्रश्न 5 वेदो में पर्यावरण विषय पर संक्षिप्त निबन्ध लिखिए।